P. R. No.: DL(S)-17/3082/2009-11
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473

शिरो-धारा

कटि-वस्ति

योग-आसन

ध्यान

नेत्र-धारा

आयुर्वेदिक चिकित्सा

फिजियोथैरेपी

COMPLETE BODY WORKSHOP

मिट्टी-चिकित्सा

एक्यूप्रेशर

सेवाधाम चिकित्सालय

मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट द्वारा संचालित

57, जैन मंदिर, रिंग रोड़,
इंडियन ऑयल पेट्रोल पंम्प के पीछे,
सराय काले खाँ बस अड्डा के सामने, नई दिल्ली-110013
दूरभाष : 011-26320000, 26327911, 09999609878

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी,** मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) जैन मंदिर आश्रम, सराय काले खाँ के सामने रिंग रोड़, पो. बो.-3240, नई दिल्ली-13, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस-1 से मुद्रित। संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
अगस्त, 2009

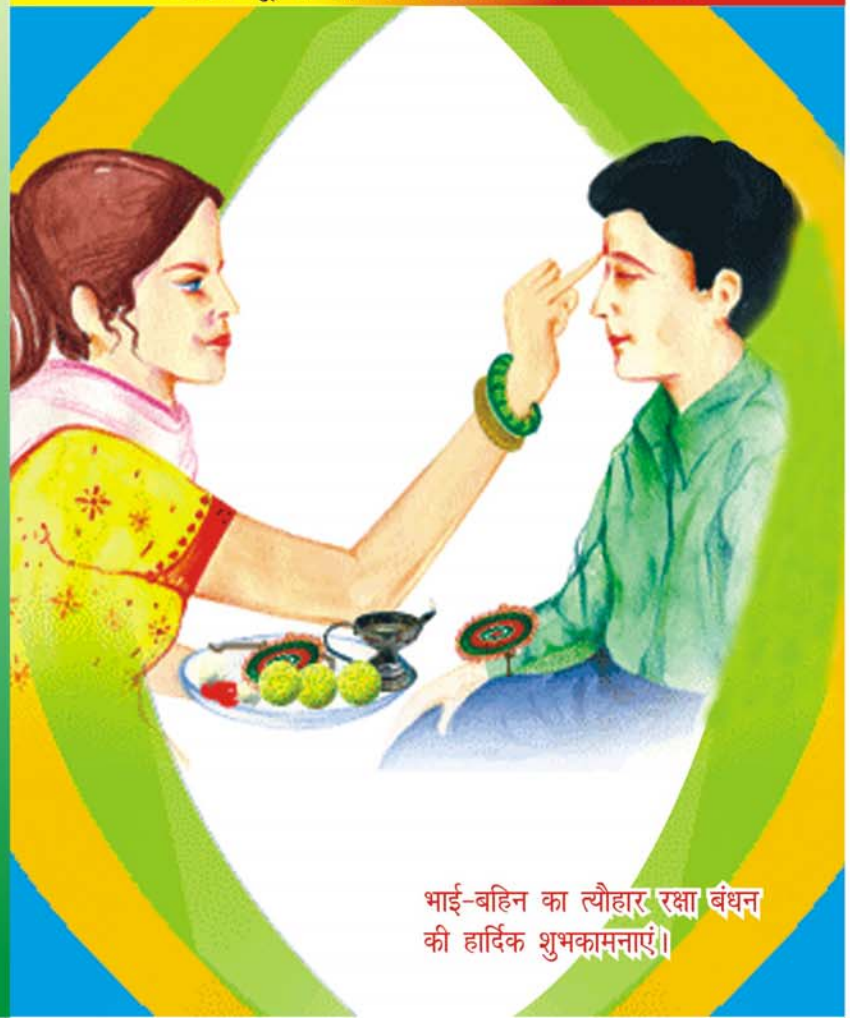

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 9 **अंक : 8** **अगस्त, 2009**

: मार्गदर्शन :

पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: सम्पादक मंडल :

श्रीमती निर्मला पुगलिया,

: व्यवस्थापक :

श्री अरूण तिवारी

एक प्रति : 5 रुपये
वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 700 रुपये

: प्रकाशक :

मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013

फोन नं. : 26315530, 26821348

Website: www.manavmandir.com
E-mail: contact@ manavmandir.com

इस अंक में

01. आर्ष वाणी - 5
02. बोध कथा - 5
03. संपादकीय - 6
04. गुरूदेव की कलम से - 7
05. विचार मंथन - 12
06. गीतिका - 15
07. कहानी - 16
08. प्रेरणा - 17
09. स्वास्थ्य - 18
10. कविता - 19
11. कभी अलविदा ना... - 20
12. चिंतन-मनन - 22
13. बोलें-तारे - 24
14. समाचार दर्शन - 26
15. झलकियां - 30

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी,
अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनूं
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी
स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री धर्मपाल अंजनारानी ओसवाल, लुधियाना
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा
धर्मपत्नी स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास गोयल सुनाम पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र
श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजवाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
श्री लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन,
न्यू अशोक नगर, दिल्ली
मास्टर श्री बेजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार

आर्ष-वाणी

तत्थिमं पढमं ठाणं महावीरेण देसियं।
अहिंसा निउणा दिट्ठा सव्वभूएसु संजमों।।

-दशवैकालिक

भगवान महावीर ने धर्म-स्थानों में सबसे पहला स्थान अहिंसा को दिया है। सब जीवों के साथ संयम से व्यवहार रखना अहिंसा है। वह सब सुखों को देने वाली मानी गई है।

बोध-कथा

आत्मा सबकी समान है

कहते हैं भगवान शिव का पुत्र कार्तिकेय बचपन में एक बार बिल्ली के बच्चों के साथ खेल रहा था। खेलते-खेलते कार्तिकेय ने बिल्ली के बच्चे का मुँह नोच लिया बिल्ली के बच्चे के गाल पर नाखून लग गए और खून बहने लगा।

कुछ समय पश्चात् खेलता-खेलता कार्तिकेय माता पार्वती के पास पहुंचा और देखा कि माता के गालों पर भी नाखूनों के निशान लगे हैं और खून बह रहा है।

कार्तिकेय ने माता से पूछा- माता आपके गाल से खून कैसे बह रहा है।

माता ने कहा- पुत्र! तुमने ही तो नाखून लगाएं हैं। कार्तिकेय ने कहा- माता मैंने तो बिल्ली के नाखून लगाया था आप के नहीं माता ने कहा- पुत्र मेरी और बिल्ली की आत्मा एक ही है। दोनों की आत्मा में कोई फर्क नहीं है। वास्तव में पुत्र! संसार के किसी भी प्राणी को सताना, मारना अपनी आत्मा के मारने और सताने के बराबर है।

सम्पादकीय

हमारा रक्षा कवच है स्नेह का एक पतला-सा धागा

रक्षा बंधन हिंदुओं का बड़ा प्रसिद्ध त्यौंहार है। इसे राखी श्रावणी या सलूनों भी कहते हैं। यह त्यौंहार श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। कहा जाता है कि एक बार देवताओं और राक्षसों में युद्ध हुआ था। देवताओं के राजा इन्द्र लगातार हारते गए। तब इन्द्राणी ने ब्राह्मणों को बुलाकर यज्ञ कराया। ब्राह्मणों ने इन्द्र के हाथ में रक्षा का धागा बांधा। इन्द्र उस रक्षा-सूत्र को पहनकर युद्ध में गये और उनकी विजय हुई। तभी से यह रक्षा बंधन का त्यौंहार मनाया जाता है। यह त्यौंहार बड़ा पवित्र त्यौंहार है। यह त्यौंहार मन में विराट भावनाओं को जगाता है। कोई हिन्दु हो या मुसलमान। ऊंचे संकल्प, जाति को नहीं देखते। राखी का धागा इन्सान में इन्सानियत जगाता है। इस देश में ऐसे अनेक भाई हुए हैं जिन्होंने अपनी बहनों के लिए अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया परंतु अपनी उपस्थिति में बहनों के सम्मान पर कोई आंच नहीं आने दी। ऐसी कितनी ही घटनाएं हमारे इतिहास में मिलती हैं। जैसे एक बार बहादुर शाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया, तो राणा सांगा की पत्नी कर्मवती ने हुमायूँ के पास राखी भेजी थी। हुमायूँ ने कर्मवती की राखी को स्वीकार किया और चित्तौड़ की रक्षा की। राखी के इन धागों ने जाति-भेद को दूर कर विजातीय बंधु के हृदय में भी स्नेह की सरिता बहा दी। जब रक्षा का प्रश्न सामने आता है तो यह नहीं पूछा जाता कि तुम कौन हो और तुम्हारी जाति, कुल क्या है। रक्षा का अर्थ है प्रेम, दया, सहानुभूति और सहयोग। रक्षा का दूसरा अर्थ है कटु जीवन को मधुरता में परिवर्तित कर देना। जिसके द्वारा अखिल विश्व में भाईचारे का संबंध स्थापित किया जाता है।

रक्षा बंधन दूसरों की रक्षा का दायित्व निभाने की प्रेरणा देता है। यह त्यौहार अब विदेशों में भी बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। जगह-2 पर मेले लगते हैं। स्त्रियां बागों में झूले डालकर झूलती है और मंगल गाना गाती है।

○ निर्मला पुगलिया

आधार में पूरब : दृष्टि में पश्चिम

○ गुरुदेव की कलम से

गतांक से आगे-

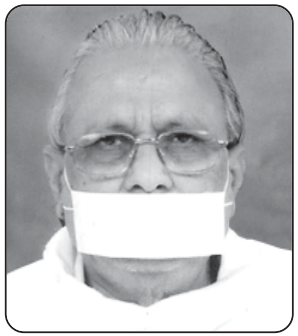

संयम ही जीवन कैसे?

प्रश्न होता है, संयम ही जीवन है- यह कहां तक सच है? यदि यह कहा जाता, अन्न ही जीवन है, पानी ही जीवन है, हवा ही जीवन है फिर भी समझ में आ सकता था। क्योंकि अन्न, पानी और हवा के बिना मनुष्य का जीना बहुत कठिन है अथवा आज के युग में यदि यह कहा जाता कि पैसा ही जीवन है तो भी समझ में आ सकता था। किन्तु संयम ही जीवन है, यह कथन समझ में आना मुश्किल है। पर बहुत बार ऐसा भी होता है जो हम समझे हुए होते हैं, तथ्य उससे उलटा ही होता है। हमको लगता है। हम अन्न, पानी और हवा से ही जीते हैं। इनके अभाव में हम मर ही जाएंगे। किन्तु मैं कहूंगा , हम अन्न, पानी और हवा से नहीं, संयम से ही जीते हैं। हमने ऐसे व्यक्तियों को देखा है, जो बरसों से कुछ भी खा पी नहीं रहे हैं, फिर भी वे जिन्दा हैं। योग साधना के बल पर वे भूख और प्यास पर विजय पा लेते हैं। उनके शरीर को अन्न और पानी की जरूरत ही नहीं पड़ती है। एक-दो महीने तक बिना अन्न-पानी के कोई भी व्यक्ति जिंदा रह सकता है। बिना सांस लिए भी व्यक्ति कई दिनों तक जिंदा रह सकता है। ऐसे व्यक्ति भी देखे गये हैं जो सांस रोककर चालिस दिनों तक समाधि में रहे हैं, और वे आज भी सामान्य ढंग से जी रहे हैं। किन्तु संयम के बिना हम एक भी दिन जिन्दा नहीं रह सकेंगे। जिस दिन भी खाने में संयम नहीं रहा, हमारी बुरी हालत हो जाएगी। रात-भर तड़पते रहेंगे हम बिछौने पर। डॉक्टर समय पर नहीं पहुंचे, तो हो सकता है प्राणान्त भी हो जाये। और अधिक मौतें ऐसे ही होती हैं। दुनिया के प्रसिद्ध डॉक्टरों का कहना है, अन्न के अभाव से मरने वालों की संख्या बहुत कम है, जबकि अधिक अन्न खाने से मरने वालों की संख्या बहुत ज्यादा है। ये आंकड़े हमें बताते हैं कि हम अन्न-पानी से नहीं, संयम से जीते हैं। खाने-पीने में हमारा जितना संयम है, विवेक है, उसी के आधार पर हम जीते हैं।

संयम समस्त साधन-पद्धति का आधार है

इसीलिए भारतीय साधना-पद्धति में संयम को अनिवार्य स्थान दिया जाता है। सभी दर्शनों का विकास भी संयम की भूमिका पर ही हुआ। दया, करूणा, दान, उपवास, जप, स्वाध्याय, ध्यान-इन सबका महत्व तभी है। जब इनकी नींव में संयम है। संयम के अभाव में प्राणशून्य ढांचे के समान हैं। नमि राजर्षि अपने सम्पूर्ण राज्य-वैभव को छोड़कर जब संन्यास के लिए उद्यत होते हैं, इन्द्र उनसे कहता है-

''जइत्ता बिउले जन्ने भोइत्ता समण-माहणे
दच्चा भोच्चाय जट्ठाय, तओ गच्छसि खत्तिया।''

हे क्षत्रिय! अभी तुम प्रचुर यज्ञ करो, श्रमण-ब्राह्मणों को भोजन कराओ, दान दो, भोग भोगो और यज्ञ करो फिर बाद में मुनि बन जाना।

नमि राजर्षि इसका उत्तर देते हुए कहते हैं-

''जो सहस्सं सहस्साणं, मासे मासे गवं दए।
तस्सा वि संजमो सेओ, अदिंतस्स वि किंचण।''

-जो मनुष्य प्रतिमास दस लाख गायों का दान देता है, उसके लिए भी संयम ही श्रेयस्कर है, भले फिर वह कुछ भी न दे। और इसलिए संयम और दान की भूमिकाओं को समझ लेना बहुत जरूरी है। नमि राजर्षि कहते हैं दस लाख गायों का दान करने वाले के लिए भी संयम श्रेयस्कर है। चाहे फिर वह दान देना ही बन्द कर दे। क्योंकि संयम के साथ ही दान की सार्थकता है। संयम के साथ ही होने वाली करूणा का महत्व है। संयम के बिना होने वाली दया और करूणा बेकार है, अपने अभिप्राय को खो देने वाली है।

संयम और करूणा में अन्तर

भगवान बुद्ध ने करूणा पर जोर दिया। उन्होंने कहा- तीर से बिंधा हुआ पक्षी सामने पड़ा-पड़ा तड़प रहा है। तत्काल उसका तीर बाहर निकालो, मत सोचो यह कि तीर कहां से आया है, किसने चलाया, क्यों चलाया? इस सोच में ही समय मत गंवाओ। तीर बाहर निकालो और पक्षी को बचाओ।

भगवान महावीर ने कहा- तीर को निकालना तो जरूरी है ही किन्तु इस पर भी ध्यान देना जरूरी है कि यह तीर किस दिशा से आया, किसने चलाया और क्यों चलाया? यदि तीर आने का मार्ग नहीं रोका गया, यदि तीर चलानेवाले का पता नहीं लग पाया तो एक तीर निकाल देने से प्राण बच जाने वाले नहीं हैं। फिर कोई दूसरा तीर उसके प्राणों

का हरण कर लेगा। इसलिए उस स्रोत को रोकना जरूरी है जहां से तीर आ रहा है।

यही संयम और करूणा में फर्क है। संयम उस मूल उद्‌गम को रोकता है, जबकि करूणा और दया केवल एक तीर को निकालकर कृतकृत्य हो जाती है। किन्तु जहां संयम नहीं, वहां दया और करूणा भी श्रेयस तक नहीं ले जा सकती। आचार्य बोधिधर्म जब चीन में पहुंचे तो उस प्रदेश का राजा उनके दर्शन के लिए आया। बहुत ही धार्मिक रूचि रखता था वह। बौद्ध धर्म के विकास-विस्तार के लिए उसने बहुत कुछ किया था। आचार्य बौधि धर्म को नमन कर उसने पूछा ''मैंने अपने जीवन में अनेक मंदिर, विहार, अनाथालय अस्पताल, धर्मशालाएं, आदि बनवाये हैं। क्या वे मेरे श्रेयस के लिए होंगे?''

आचार्य बोधि धर्म ने कहा-''नहीं।''

राजा इस उत्तर के लिए तैयार नहीं था। वह तो सोचता था कि आचार्य मेरे इन कार्यों को महान श्रेयस्कारी बतायेंगे। इससे विपरीत उत्तर सुनकर हत-प्रभ-सा रह गया। उसने साहस बटोरकर फिर पूछा-''आर्य, मैंने भगवान् तथागत के सन्देश को घर-घर तक पहुंचाने के लिए अपने दूतों को स्थान-स्थान पर भेजा है। भगवान बुद्ध की वाणी को लिपिबद्ध कराकर हजारों-हजारों स्थानों में वितरित करवाया है। क्या ये मेरे श्रेयस् के लिए होंगे?''

आचार्य क्षण-भर के लिए रूके। राजा सोच रहा था, इस बार वे अवश्य मुझ पर प्रसन्न होंगे और इन कार्यों को महान् पुण्य का कारण बतायेंगे। तभी आचार्य ने धीमे से कहा-''नहीं।''

यह सुनते ही उसका धीरज का बांध टूट गया। आचार्य पर झुंझलाहट भी आयी उसे। ये भी कोई आचार्य हैं जो हर पुण्य कार्य को नकारते जा रहे हैं! किन्तु आचार्य से कुछ कहने का उसमें साहस भी नहीं था। फिर बिनम्र मुद्रा में पूछा-''कृपा करके आप ही बताइए, कौन-सा है फिर श्रेयस् का मार्ग?''

आचार्य ने कहा-''शील, समाधि और प्रज्ञा की साधना ही श्रेयस् का मार्ग है। मंदिर, बिहार, धर्म-प्रचार, शास्त्र-लेखन केवल चित्त को उल्लास से भरनेवाली प्रवृत्तियां हैं। शील की साधना के साथ उनका महत्व हो भी सकता है, किन्तु शील के अभाव में श्रेयस् नहीं सधनेवाला है।''

साम्यवाद और नक्सलवाद का जन्म क्यों

भारत में धर्म और पुण्य के नाम पर जितना दान होता है, दुनिया के शायद ही किसी देश में होता हो। अरबों-खरबों रूपयों के दान-कोष बने हुए हैं हमारे यहां। दस रूपया

मजदूरी करके कमाना मुश्किल है हमारे देश में, किन्तु एक भिखारी को दस रूपया दान में बड़ी आसानी से मिल जाता है। हजारों की संख्या में मन्दिर, स्कूल-कॉलेज, धर्मशालाएं, हॉस्पिटल, अनाथालय आदि बने हुए मिलेंगे केवल इस दान की राशि से। दान की इतनी उदार परम्परा के बावजूद भारत में साम्यवाद और नक्सलवाद जैसी खतरनाक विचारध ाराओं का जन्म होना अपने मे एक महान् आश्चर्य है। इसका एकमात्र कारण यही है कि दान का प्रचलन यहां अवश्य है, किन्तु लोगों के जीवन में संयम की प्रतिष्ठा नहीं। यहां का एक व्यक्ति दान में लाखों रूपये अवश्य दे सकता है, पर उसे यदि यह कहा जाये कि तुम तस्कर व्यापार, चोरबाजारी आदि अनैतिक तरीकों से रूपये मत कमाओ, फिर चाहे तुम दान मत भी दो, तो यह उसके लिए सम्भव नहीं है। दान उसके लिए सम्भव है, संयम उसके लिए सम्भव नहीं। और इसी असंयम ने बुद्धिजीवी लोगों के दिलों में धर्म के प्रति नफरत की भावना पैदा की है। इसी असंयम ने देश में नक्सलवाद को जन्म दिया है, असंयम ही जन्मदाता है नास्तिकता का। नक्सलवादी लोग देखते हैं, हमारा ही शोषण कर ये लोग धनवान् बनते हैं और हमें ही फिर रोटी का सूखा टुकड़ा डालकर ये दान और पुण्य कमाते हैं। विलास भी ये भोगते हैं और धर्मात्मा भी ये ही बनते हैं। इसी की प्रतिक्रिया ने धर्म के प्रति लोगों के दिलों में अनास्था पैदा कर दी। इसी की प्रतिक्रिया ने भारत में नक्सलवाद को पांव पसारने का मौका दिया। सचाई यह है कि करूणा, दया, दान, जप, उपवास तथा अन्य सभी क्रियाकाण्डों का तभी मूल्य है, जब उनके आधार में संयम है।

संयम की प्रतिष्ठा आवश्यक

पूरब का जीवन गरीबी से आक्रान्त होकर पश्चिम की ओर भाग रहा है। पश्चिम का जीवन अमीरी से आक्रान्त होकर पूरब की ओर भागता आ रहा है। पर पूरब यदि पश्चिम हो जाये और पश्चिम यदि पूरब हो जाये, तो भी समस्या का समाधान नहीं होनेवाला है। क्योंकि पूरब ने अपनी वैज्ञानिक दृष्टि खो दी है और पश्चिम के पास धर्म नहीं है। अब पूरब जब विज्ञान की ओर जा रहा है, पश्चिम धर्म के नजदीक आ रहा है। किन्तु पूरब ने धर्म में वैज्ञानिक दृष्टि पहले ही खो दी है, और पश्चिम विज्ञान से ऊबकर कोरे धर्म को, बाहरी क्रियाकाण्डों को ही पकड़ रहा है, इसलिए पूरब यदि पश्चिम हो जाये और पश्चिम पूरब हो जाये, फिर भी मानवता पर आया हुआ संकट दूर होने वाला नहीं है। यह संकट ज्यों का त्यों बना रहेगा।

एक गांव में एक आस्तिक और एक नास्तिक रहते थे। दोनों ही प्रकाण्ड विद्वान,

अपने-अपने विषयों के प्रतिपादन में विलक्षण। गांव के लोग परेशान थे। जब वे आस्तिक के पास जाते, तो वे आस्तिक बन जाते। आस्तिक व्यक्ति की दलीलें ही कुछ ऐसी थीं कि लोगों को आत्मा, परमात्मा, पुनर्जन्म पर विश्वास हो जाता। उन्हें लगता यही व्यक्ति सच्चा है, नास्तिक झूठा है।

किन्तु नास्तिक भी कोई कच्चा खिलाड़ी नहीं था। वह एक से एक अधिक वजनवाले प्रमाण, एक से एक अधिक वजनदार तर्क लोगों के समक्ष रखता। लोग मुश्किल में पड़ जाते। उन्हें लगता, आस्तिक ने उनको गुमराह कर दिया है। वस्तुतः आत्मा-परमात्मा का अस्तित्व हो नहीं सकता। यह व्यक्ति ठीक कह रहा है। किन्तु जब वे पुनः अस्तिक के पास जाते, उन्हें वह ठीक लगता।

सारा गांव परेशान था। किसको सही माना जाये और किसको गलत, समझ में ही नहीं आ रहा था। एक बार सबने मिलकर सोचा- इस संकट का अन्त तभी हो सकता है जब वे दोनों मिलकर यह निर्णय कर लें कि कौन सही है, कौन गलत। दोनों चर्चा करें, फिर जो हार जाये, वह दूसरे की बात मान ले। इस परेशानी का अन्त अपने आप हो जायेगा।

चर्चा का समय तय कर दिया गया। ऊंचे-ऊंचे मंच पर दोनों विद्वानों को बैठाया गया। सामने पूरा गांव बैठ गया। रात-भर चर्चा चलती रही। आस्तिक ने अपने अकाट्य तर्क प्रस्तुत किये। नास्तिक ने अनेक सबल प्रमाणों से अपने मत की पुष्टि की। सवेरा होने को आया। लोग खुशी से झूल रहे थे कि आज दोनों एक मत पर अवश्यक पहुंच जायेंगे।

दोनों की वाग्मिता अपूर्व थी। लोग सोच रहे थे, दोनों या तो नास्तिक हो जायेंगे या आस्तिक। लेकिन हुआ यह कि आस्तिक तो नास्तिक हो गया और नास्तिक आस्तिक हो गया। लोगों को बहुत निराशा हुई। उनका संकट, उनकी परेशानी तो फिर वैसी की वैसी रह गयी।

पूरब आज धर्म से परेशान है। पश्चिम आज विज्ञान से परेशान है। इसीलिए सारी मानव-जाति पर एक संकट छाया हुआ है। यदि पश्चिम पूरब बन गया और पूरब पश्चिम बन गया, तो भी वह संकट कम होनेवाला नहीं है। वह संकट दूर तभी होगा, जब आधार संयम का होगा, दृष्टि की विज्ञान की होगी आधार में पूरब होगा, दृष्टि में पश्चिम होगा। तभी यह संकट दूर होनेवाला है, तभी मानव जाति को एक महान् विनाश से उबारा जा सकेगा।

न्यायालय ही फैसला करेगा

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

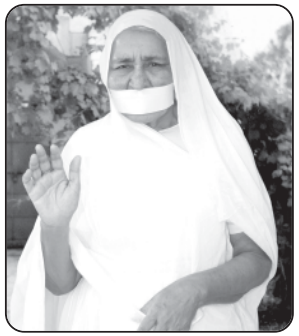

मंजरी! हमारे घर में किस चीज की कमी है? तुम क्यों इस तरह विक्षिप्त-सी घूमती रहती हो? अच्छे कपड़े पहना करो। अच्छे ढ़ग से रहा करो। आए-गए की अच्छे ढंग से आव-भगत किया करो। बच्चों को भी साफ-सुथरा रखा करो। आवारा बच्चों की तरह गली में घूमते रहते हैं। तुम नौकरानी की तरह बाल बिखेर इधर-उधर चक्कर काटती रहती हो। इससे हमारे खानदान की इज्जत मिट्टी में मिल जाती है।

महिपाल! तुम्हें मेरा पहनावा पसन्द नहीं है। मेरे चाल-चलन पर तुम्हें कोई शंका है तो तुम ले आओ स्वर्ग की कोई उर्वशी। मुझसे तुम अधिक आशा मत रखना।

मंजरी! तुम हर बात को उल्टा समझती हो, तुम्हें कोई तुम्हारे हित की शिक्षा देता है तो उस पर भी बरस पड़ती हो। मेरी पहली पत्नी इतनी आज्ञाकारी, मिलनसार, समझदार और स्वच्छता प्रिय थी कि मुझे कभी दो शब्द कहने की जरूरत नहीं पड़ी।

महिपाल! अपनी आज्ञाकारी धर्मपत्नी को क्यों गुजरने दिया। अमर बना लेते उसको। या फिर उसके शव में फिर से प्राण फूँक देते जिससे तुम्हारा मेरे जैसी फूहड़ औरत से वास्ता नहीं पड़ता। फूटने के बाद हर आँख कटोरी जितनी बड़ी लगती है। कहने को मैं भी कह सकती हूँ कि मेरा पहला पति मेरे पर इतना अधिक विश्वास करता था कि लाखों रुपये के नोट मेरे भरोसे छोड़ जाता था, जबकि तुम दो पैसे भी बाहर नहीं छोड़ते हो। चार-छह आने की चीज भी लानी हो तो तुम्हारा मुंहताज बनकर रहना पड़ता है।

भली औरत! जब तुम्हारा पहला पति तुम्हें इतने सम्मान से रखता था। बेहद विश्वास करता था तो उसे छोड़कर आने की क्या जरूरत थी? फिर उसी का घर आबाद करतीं। तुम जैसी सनकी औरत कहीं सन्तुष्ट नहीं हो सकती।

महीपाल! खबरदार जो मुझ पर ऐसी धौंस जमाई और मुझको इतने तीखे ताने दिए तो। लो चली मैं अपने मायके। संभालो अपने बच्चों को और घर को। थोड़ा-सा पैसा कमा

लिया, एक कोठी बना ली और थोड़ा बिजनेस चल पड़ा तो दुनिया भर का घमण्ड आ गया।

रामू! जरा देखना मंजरी कहाँ जा रही है?

बाबू! मालकिन अपने मायके गई हैं।

अच्छा मैं उसको लेने जाता हूँ तुम घर पर बच्चों का ध्यान रखना।

बाबू! आप लेने जाओगे तो बहू जी और सर पर चढ़ेंगी। नहीं तो दो-चार दिन में उनका नशा उतर जाएगा।

भैया! तू नहीं समझता यह मेरी दूसरी औरत है। दूसरी औरत के नखरे तो बर्दाश्त करने ही पड़ते हैं।

बाबूजी! बीबी जी कौन सी पहली बार ब्याही गई हैं। वो भी तो आपसे पहले एक शादी कर चुकी हैं। जो औरत एक पति की होकर नहीं रह सकी, अब वह आपके साथ कैसे रहेगी।

भैया कुछ भी हो, मेरी तो अपनी गर्ज है इसलिए उसे मनाकर लाना ही पड़ेगा। बच्चों को जो यहाँ छोड़ गई है। फिर कानून भी आजकल औरतों का पक्षधर है। आदमी चाहे निर्दोष हो फिर भी उसको हथकड़ियाँ पड़ जाती है। औरत चाहे सो अपराध कर ले फिर भी आजाद हो जाती है।

अच्छा बाबूजी! आप बहू जी को लेने जाओ। मैं बच्चों को स्कूल छोड़ के आता हूँ।

बेचारा महिपाल ससुराल के मकान में घुस भी नहीं पाया था कि गालियों की बौछार शुरू हो गई। किसी तरह श्रीमती जी को मनाकर घर लाया कि बीबीजी फिर बिफर गई।

महिपाल! चलो कोर्ट में मुझे तुमसे तलाक लेना है।

मंजरी? तुम मेरे जीवन के साथ खिलवाड़ करने पर क्यों तुल गई हो? तुम क्या चाहती हो? तुम्हारे पाँव पकड़ता हूँ। तुम जैसे भी रहना चाहो रहो लेकिन यह तलाक-वलाक की बात मत करो।

सेठजी! सुन लो। मुझे घर में रखना है तो मैं अपनी मर्जी से जीवन जीऊँगी मैंने तुम्हारे रिश्तेदारों और दोस्तों की आव-भगत का ठेका नहीं लिया है। किसी को नाश्ता-पानी करवाना हो तो होटल में ले जाइयेगा। मैं दिन भर चूल्हे चौके से नहीं बँधी रहूँगी। जब मेरा जी करेगा बाहर बाजार या पार्क में जाऊँगी। जब मेरा मन करेगा अपनी सहेलियों के पास जाऊँगी। घर की सफाई, कपड़े धोना, खाना बनाना ये सब मेरे काम नहीं हैं। आपका नौकर खाना बना दे तो खाना खा लो वरना ढाबे पर खाकर आ जाया करो। मैं खाना नहीं बनाऊँगी। बच्चों की देखभाल की भी मेरी जिम्मेवारी नहीं होगी।

अच्छा मंजरी! तुम कुछ मत करना। सारे काम नौकर कर लेगा। जो काम वह नहीं कर सकेगा वह मैं खुद कर लूँगा। लेकिन तुम यह तो बताओ निठल्ली बैठी-बैठी करोगी क्या? तुम जानती हो खाली दिमाग शैतान का घर है। अरे पगली! हर एक की अपनी-अपनी जिम्मेवारी भी होती है। आदमी कमाकर लाता है औरत घर और बच्चों को संभालती है। फिर तुम क्या गैर जिम्मेवारी का जीवन जीओगी?

महिपाल! जिम्मेवारी ही मुझे देनी है तो कमाने की जिम्मेवारी मुझे दे दो और घर परिवार का जिम्मा तुम ले लो। तुम कल ही मुझे खाली पड़ी दुकान पर सामान मंगवा दो और मैं तुम्हें कमाकर दिखाऊँगी।

मंजरी! हम जिस समाज में जी रहे हैं वहां औरतों का इस तरह दुकान पर बैठना अच्छा नहीं माना जाता। फिर भी तुम्हें ऐसा करने में सन्तोष मिलता है तो मुझे कोई ऐतराज नहीं है। सुनो रामू! कल ही बाजार से सामान लाकर अपनी खाली वाली दुकान में भर देना।

बाबू! उस दुकान में तो आप चक्की लगाने की बात कह रहे थे न? अच्छा चक्की लगवा दो, तुम्हारी सेठानी मसाले, आटा पिसवाया करेगी।

मालिक यह क्या करते हैं आप? सेठानी जी वहां बैठेंगी? बाबू! बड़ी तौहीन होगी आपकी और आपके खानदान की।

कोई बात नहीं रामू! मुझे बड़ी बदनामी से बचने के लिए छोटी बदनामी सिर पर लेनी होगी। जैसे तेरी मालकिन का मन राजी रहे वैसा मुझे करना ही है।

मालिक आप मर्द होकर इस तरह जोरू का गुलाम क्यों बनते हो? हम पढ़े-लिखे नहीं हैं। हमारा समाज अनपढ़ गंवार लोगों का है फिर भी हम औरत के गुलाम नहीं बनते? हमारे यहाँ आदमी-औरत दोनों बराबर कमाते हैं, फिर भी औरत को घर का सारा काम करना पड़ता है। और हमारी हाजरी भरनी पड़ती है। आप जितना दबते हो, बीबीजी आपको उतना ही दबाती रहती है।

रामू! औरत से क्या डरना है। अपनी इज्जत से डरना है। तू बैठने दे इसको दुकान पर। हम दोनों चौका-चूल्हा संभाल लेंगे। इतने पर भी यह शान्ति से जी लेने देगी तो हमारा घर-संसार तो बसा रहेगा।

महिपाल! रामू कोई चौका चूल्हा नहीं करेगा। यह तो दुकान में सामान तोलने, पीसने का काम करेगा। बाहर भीतर का काम देखेगा।

अच्छा मंजरी? फिर तुम दुकान पर बैठी-बैठी क्या करोगी?

मैं पैसों का हिसाब रखूंगी, आर्डर दूंगी। क्या तुम्हारे खानदान की औरतें अनाज तौलती हैं, मैं बाजार से सामान लाती अच्छी लगूंगी।

मंजरी! कुर्सी पर बैठना ही दुकानदारी करना नहीं है। अगर तुम्हें व्यापार करना है तो ठीक से करो, नहीं तो तुम वैसे ही घर में बैठी रहो, तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा। तुम आराम से खाना खाओ और पलंग पर लेट जाओ। मेरी किस्मत फूटी थी जो मैं तुम्हारे जैसे पत्थर को उठा लाया।

महिपाल! तुम्हारे और मेरे रास्ते अब नहीं मिल सकते। चलो कोर्ट में अब जज ही फैसला करेगा।

गीतिका

-आचार्य रूपचन्द्र

परम पावन वीर प्रभु को, आत्म-मंदिर में बिठाएं
वंदना के इन स्वरों में, एक स्वर अपना मिलाएं।।

हो अचल श्रद्धा समर्पण, मनवचन हर कर्म अर्पण
प्रभु चरण की शरण लें हम, भक्ति की गंगा बहाएं। (1)

तोड़ दें अज्ञान घेरा, कौन तेरा कौन मेरा
उस अलख की झलक पाने, ज्ञान का दीपक जलाएं। (2)

बीज जैसा तरू फलेगा, कर्म जैसा फल मिलेगा
नेक ऊंचे आचरण से, हम धरा पर स्वर्ग लाएं। (3)

देव बनकर देव पूजा, हो न दिल में और दूजा
''रूप'' अपने देवता की, राह में पलकें बिछाएं। (4)

तर्ज-जो व्यथाएं प्रेरणा दें...

कहानी

क्षमा कसौटी संत की

○ साध्वी श्री मंजुश्री

गोदावरी नदी के तट पर एक पैठण नाम का एक गांव था। वहां नदी के तट पर एक संत रहते थे। उनका नाम संत एकनाथ जी था। उनकी पत्नी श्रीमती गिरजाबाई थी एक नाथजी की तरह ही क्षमा की मूर्ति थी। उसी गांव में एक कुचर चबूतरा था जो कि बदमाशों गुण्डों, शराबियों और व्यभिचारियों का अड्डा था। गुंडे यहां बैठ कर ही षडयन्त्र रचते थे। एक बार एक भूखा-प्यासा ब्राह्मण वहां आ पहुंचा। वह कई दिनों से भूखा था। उसने कुचर चबूतरे पर बैठे लोगों से भिक्षा की प्रार्थना की। बदमाशों ने कहा-ब्राह्मण! अगर तू संत एकनाथ व उसकी पत्नी को गुस्सा दिला दे तो हम तुम्हें दो सौ रूपये देंगे।

भूखा ब्राह्मण उन बदमाशों की बात में आ गया। वह सीधा संत एकनाथ जी की कुटिया में पहुंचा। सायंकाल का समय था। संत पूजा कर रहे थे। वह ब्राह्मण सीधा संत की गोदी में जाकर धम्म से बैठ गया।

संत एकनाथ जी ने कहा भाई! मिलने वाले बहुत आते हैं पर तुम्हारी तरह आत्मीयता से मिलने वाला तो कोई नहीं आता। अगर तुम आये हो तो आज भोजन भी यहां करके जाना।

बेचारा ब्राह्मण हैरान। उसका छोड़ा गया पहला तीर बेकार चला गया। पूजा उपरांत वह संत के साथ भोजन करने बैठा। जब संत एकनाथ की पत्नी गिरजाबाई खिचड़ी में घी परोसने झुकी तो वह ब्राह्मण कूदकर उसकी गर्दन पर जा बैठा। संत ने अपनी पत्नी को हिदायत दी कि देखो कहीं तुम्हारा पुत्र गिर न जाये। इसको चोट न लग जाये।

गिरजाबाई ने कहा स्वामी-आप निश्चिंत रहें। मुझे अपने पुत्र हरि को यों ही रखने की आदत पड़ी हुई है। उन दोनों की बात सुनकर वह ब्राह्मण पानी-पानी हो गया झट से नीचे उतरा और दोनों के पावों में गिर पड़ा और सारी घटना बताते हुए उनसे पुनः पुनः क्षमा याचना की। दोनों पति पत्नी ने उसे खाना खिलाकर आशीर्वाद देकर विदा किया।

ईश्वर मंदिरों में नहीं, हमारे भीतर है

किसी भी पदार्थ या वस्तु को हासिल करने के लिए सामान्य नियम वह है कि वह जहां है, वहीं से प्राप्त होगी। उसे उस स्थान के अलावा कहीं और से हासिल नहीं किया जा सकता । मिसाल के तौर पर सोने के आभूषण सुनार के यहां मिलेंगे, अनाज के गोदाम से नहीं। इसी तरह कपड़े के व्यवसायी के यहीं वस्त्र मिलेंगे, साग-सब्जी नहीं। इसी तरह प्रकृति का सिद्धांत है कि आम के वृक्ष से आम मिलेंगे, लीची नहीं। लीची तो लीची के पेड़ से ही प्राप्त हो सकती है।

हम सभी इस तथ्य से भली-भांति वाकिफ हैं। इस बारे में हम कोई भूल या गलती नहीं करते हैं। लेकिन जब बात आती है परमानंद की, भगवान की, खुदा की, वाहेगुरू की, अल्लाह की, तो यह जानते हुए कि वह हमारे अंदर है, हम उसे बाहर ढूढते हैं। संतों ने यही कहा है कि जो वस्तु हमारे अंदर है, हम उसे बाहर ढूढ़ बंदे बाहर तो भला वह कैसे प्राप्त होगा? रूमाल मेरी जेब में है और मै उसे अन्यत्र ढूंढ रहा हूं तो क्या वह मुझे मिलेगा? कदाति नहीं।

दूसरी बात यह है कि जो चीज प्रत्यक्ष है, हमारे सामने मौजूद है, उसे ढूढ़ने की क्या जरूरत? ढूढी जाती है वो चीज, जो गुम हो गई हो। परमात्मा को ढूढ़ने की भला क्या जरूरत? क्या वह खो गया है? वह तो हर पल, हर सांस में हमारे साथ मौजूद है। हाजिर में हुज्जत और गैर की तलाश अर्थात् जो हाजिर है हम उसे नकार रहे हैं और बाहर कहां कहां ढूढ़ रहे हैं?

महात्माओं ने यही बात कही है कि जो चीज पहले से ही हमारे अंदर मौजूद है, प्राप्त है, उसी की तो पाना है। यह कैसी विडंबना है कि हम उस 'प्रात' चीज को बिसरा कर उसे बाहर ढूढ़ रहे हैं। जो चीज हमारे पास है वह भला कहीं और कैसे जा सकती है? हमें उस चीज की उपस्थिति का ज्ञान सिर्फ इसलिए नहीं होता, क्योंकि वह अभी तक आवृत है। उस पर हमारी अज्ञानता का आवरण पड़ा हुआ है।

इससे आगे विचारे करें। हम किसी नए स्थान पर जाते है और वहां का पता हमारे स्थान पर जाते है और वहां का पता हमारे पास मौजूद रहता है, फिर भी हम लोगों से पूछते हैं। क्योंकि सिर्फ पता मालूम रहने से हम सही जगह नहीं पहुंच सकते। हमें उस जगह की गलियों और मोहल्लों का ज्ञान चाहिए। इसलिए हम पहले वहां के किसी निवासी से उस स्थान के बारे में मालूम करते हैं और तब सही जगह पर पहुंचते हैं।

इसी प्रकार क्या हम कभी किसी जानकार व्यक्ति से यह पूछते हैं कि ईश्वर कहां मिलेगा? परमानन्द कहां मिलेगा? पता संभवतः हमें मालूम हो, क्योंकि हमने हर जगह यह पढ़ा और सुना है कि वह हमारे हृदय में रहता है, परंतु हृदय में उसे कैसे खोजा जाए? हमें गलियां और मोहल्ले तो मालूम नहीं हैं। कोई साधु, कोई गुरू, कोई ज्ञानी है नजर में जो बता दे कि हृदय में स्थित ईश्वर तक कैसे पहुंचा जाए? आसपास कोई ऐसा ज्ञानी जन हो भी तो उसे पहचानें कैसे? साधु मिल भी जाए तो पूछें कैसे? संकोच होता है। इसीलिए ईश्वर की खोज में दर-दर भटकते रहते हैं।

परमात्मा का निवास हमारे हृदय में है ओर हम उसे मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, चर्च और तीर्थ स्थानों में खोज रहे हैं।

गर्मियों में अवश्य करें सलाद का सेवन

उमस भरी गर्मी शरीर का तेल निकाल देती है पसीने के रास्ते। पसीना शरीर से पानी और नमक खींच लेता है। इसकी भरपाई के लिए खीरा, टमाटर, नींबू और सलाद की पत्तियां खाऐं।

ककड़ी खीरा

शरीर में फाइबर व पानी बढ़ाते हैं। ककड़ी, खीरा फाइबर बढ़ाने का अच्छा तरीका है क्योंकि इसमें प्राकृतिक रूप से अतिरिक्त फ्लूइड होती है। इससे आपकी त्वचा पर निखार आ जाता है। रंग को निखारने व त्वचा को स्वस्थ बनाने के लिए इसका जूस पीयें क्योंकि पानी की अधिक मात्रा के कारण यह प्राकृतिक रूप से हाईड्रेटिंग है जो चमकदार त्वचा के लिए आवश्यक है। इसका इस्तेमाल त्वचा की विभिन्न समस्याओं के उपचार के लिए भी किया जाता है जैसे सनबर्न और आंखों के नीचे की सूजन को दूर करने के लिए।

खीरे में एस्कोरविक एसिड और कैफिक एसिड होता है जो वाटर रिटेंशन रोकता है।

टमाटर

- टमाटर से रक्त शुद्ध होता है।
- जिगर को फायदा पहुंचाता है और पित्त की थैली की पथरी को धुलने में मदद करता है।
- टमाटर प्राकृतिक एन्टीसेप्टिक है।
- टमाटर में जो निकोटिनिक एसिड होता है वह ब्लड कोलेस्ट्रोल को कम करता है और इसी तरह हृदय रोगों की रोकथाम में मदद करता है।
- इसका विटामिन-के हैमोरिज को रोकने में मदद करता है।
- लायकोपीन के रूप में इसमें जबरदस्त एन्टीऑक्सीडेंट होता है जो कैंसर की कोशिकाएं बनने के विरूद्ध लड़ता है।

नीबू

- गर्म पानी में नींबू का अर्क और एक चम्मच शहद से कोल्ड दूर हो जाता है।
- यह शरीर के जहरीले पदार्थ नष्ट करता है। डिप्थीरिया, टायफाइड और स्कर्बी जैसी बीमारियों के कीटाणु यह नष्ट करता है।
- विटामिन-सी की अधिकता के कारण इससे मसूड़े और दांत मजबूत होते हैं।
- गले की खराबियों को दूर करने में नींबू बहुत कारगर है।
- पका हुआ नींबू अच्छा एपिटाइजर है। यह स्लाइवा, गैस्ट्रिक जूस की मात्रा को बढ़ाता

है और पाचन में मदद करता है। यह आंतों के कीड़ों को नष्ट करता है और पेट की गैस को बाहर निकालता है।

- बुखार, मीजिल और पोक्स की स्थिति में इसकी ड्रिंक प्यास बुझाती है।
- यह मोटापे का भी उपचार है।
- इसे जवानी बरकरार रखने वाला समझा जाता है। त्वचा के दाग-धब्बे दूर करने के लिए उस पर नींबू रगडें। इसके अर्क से बालों पर चमक आती है।

प्रस्तुति : अरूण तिवारी

कविता

-सुश्री चेरी दूगड़

है मुबारक दिन छाई कितनी बहार
आज महफिल हो रही इन पर निसार

उम्र में इनकी बरस एक बढ़ गया
राह में एक और दीपक जल गया
आज मन वीणा के बजते तार-तार
आज महफिल 2

खुशनसीबी है आपके साथ है
इस खुशी में भी आपके पास है
हर समर्पित कर रहें गीतों के हार
आज महफिल 2

आपके आंगन बहारे गाएंगी
हर खुशी दर आपके ही आएंगी
हर घड़ी मिलता रहे हर एक प्यार
आज महफिल 2

कहानी

कभी अलविदा न कहना!

○ श्रीमती मंजुलता महापात्र

(गतांक से आगे)

संदूक में रखी माला को गौरी रोज ध्यान से निहारती है। जब वह अकेली होती है तब। अब?... सब उसका बचपन विदा लेकर चला गया। आयी तो सिर्फ जवानी। उसे दुनिया से क्या लेना देना है? वह अपने आप में मस्त है। इस उम्र में उसे एक साथी चाहिए, जो उसे पसन्द है और हमसफर बन सके। गौरी ने ऐसा साथी कब से चुन लिया है। जब साथी पास में नहीं होता, तब उसी माला को गले से लगाकर गौरी अपनी तनहाई दूर भगाती है। माँ की आवाज कानों में पड़ते ही फटाफट माला को यथास्थान रखकर गौरी माँ के पास चली गयी।

केदार?... अच्छा खासा सुडौल शरीर और लम्बा कद लेकर एक संपूर्ण नौजवान का रूप ले चुका है। युवतियों की नजर आकर्षित होकर उस पर टिक जाती है। लेकिन बचपन की साथिन यौवन में भी उसके साथ है। इसके लिए अब तक कोई प्रतिरोध नहीं हुआ, तो इनके दिलों में बिछुड़ने का डर नहीं है।

उम्र बढ़ने के साथ-साथ केदार के पिताजी बेटे को जिम्मेदारी का एहसास दिलाते रहते हैं। बेटा भी आगे बढ़ रहा है उनकी मदद करने के लिए। बड़ी शान से अपनी पत्नी से कहते हैं- ''केदार की माँ! कुछ दिनों के बाद मैं अपने कामों से अवकाश ले लूँगा। केदार अब हमारे लम्बे-चौड़े कारोबार को संभालने योग्य हो गया है। उसे काम सौंपकर बाद में तुम्हारे साथ तीर्थयात्रा के लिए निकल पड़ूंगा। जिन्दगी-भर कमाई के पीछे मैं प्रभु का नाम भूल गया था। अंत में उनके पास जाना जो है।''

''ओ जी, प्रभु का नाम तो यहाँ भी ले सकते हैं। उसके लिए तीर्थयात्रा करना जरूरी है क्या? अभी तो तुम से बुढ़ापा कोसों दूर है। बेटा अभी बड़ा कहाँ हुआ है? उसकी उम्र तो हँसने-बोलने की है। इतनी जल्दी उसे जिम्मेदारी के बोझ तले दबाना चाहते हो?''

''रहने दो, तुमसे कोई सलाह नहीं माँगता। मुझे अच्छी तरह पता है कि मैं क्या कर रहा हूँ।''

पत्नी एकदम चुप लगा गयी। तभी नौकर ने आवाज दी-''मालिक! पड़ोसी की गाय ने हमारे खेत में घुसकर सारी क्यारी को तहस नहस कर दिया। मैं उसे पकड़ कर ले आया हूँ। खंबे से बाँधकर रखा है।''

मालिक का पहले ही पारा गरम था। अब नुकसान की खबर सुनकर जोर-जोर से

आवाज करते हुए आँगन में आ गये। वहीं से गौरी के पिताजी पर खपा होकर चिल्लाने लगे। आँगन में सामने गौरी दिखाई पड़ी डरी-सहमी-सी।

''गौरी! तेरा बाबा कहाँ है? बुला उसे।''

तब तक गौरी के पिता बाहर आ चुके थे। प्रत्युत्तर में उन्होंने पूछा-''भाई साहब! क्या हुआ? आप इतने क्यों चिल्ला रहे हैं?''

''चिल्लाऊँ नहीं तो क्या तुझे गले लगाऊँ? मेरा नुकसान कौन भरेगा? तेरा बाप? गाय को घर पर बाँध कर नहीं रख सकता है?''

छोटी-सी बात के कारण अगर ये बाप तक पहुँचे हैं तो क्या गौरी के पिताजी उन्हें छोड़नेवाले हैं? तुरंत कमर कस कर प्रत्युत्तर के लिए खड़े हो गये। एक अगर उन्नीस है तो दूसरा बीस है। कोई किसी से कम नहीं है। ऐसे हाल में केदार बाहर आ गया। पिताजी के गुस्से को समझाकर कम करने के लिए। दोनों तरफ से दोनों की पत्नियों की यही कोशिश रही कि झगड़ा आगे न बढ़े। लेकिन रोकने से कोई नहीं रूका। बात इतनी आगे बढ गयी कि पड़ोसी का रिश्ता जानी दुश्मनी में तबदील हो गया। एक ही आँगन में दो हिस्से बंट गये दो टुकड़ों में। बीच में एक ऊँची दीवार खड़ी कर दी गयी। ताकि कोई किसी की सूरत तक न देख सके। दीवार बनाने के वक्त केदार ने कहा था- बाबा आप दोनों में झगड़ा हो गया ठीक है। कभी इसका समाधान हो ही जायेगा। मगर गुस्से में आकर आंगन के बीच ऊँची दीवार खड़ी कराना क्या उचित है?''

केदार बड़ा हो गया है, यह सच है। फिर भी अब तक पिताजी उसे छोटा ही मानते हैं। उनसे बढ़कर बेटा कैसे बोल सकता है?

''केदार! तुम अपनी हद भूल रहे हो। मुझे उपदेश देने के बजाय अपना काम करो।''

केदार अब आगे कुछ नहीं बोल पाया। चुप तो रह गया लेकिन मन-ही-मन बड़ा तड़पता रहा। दीवार के कारण गौरी के साथ मुलाकात नहीं हो पायेगी। माँ के सामने यह बात रखने पर उसने बड़ी सरल भाषा में समझा दिया- ''बेटा! पिताजी घर के अभिभावक हैं। उनका कहा या जो वे कर रहे हैं, उसे हमें स्वीकार करना पड़ेगा कैसे भी। औरों के खातिर पिताजी के विरुद्ध जाना गलत है बेटा! तू गौरी के लिए परेशान है, मैं जानती हूँ। एक गौरी के बदले कई गौरी-जैसी लड़की मिलेंगी। अब भूल जा उसे।''

यही तो माँ नहीं समझ पायी कि केदार को एक सिर्फ गौरी ही चाहिए। गौरी-जैसी कइयों से उसे क्या लेना देना है? पहले प्यार को भूलना मुमकिन नहीं।

-क्रमशः

जीवन एक चुनौती

○ गीता गुप्ता, मैसूर

(गतांक से आगे)

भूपति की भी उम्र की कोई ज्यादा तो नहीं थी पर जमाने के क्रूर थपेड़ों ने उन्हें उम्र से कहीं ज्यादा स्वावलंबी व समझदार बना दिया था। बस यूँ ही जीवन की नैय्या जैसे नदी में तैरती चली जा रही थी। भूपति को छोटे-2 बच्चों से बडा प्यार था वे बड़े स्नेह व प्रेम से उन्हें खिलाने में उनसे बातें करने में उन्हें बडा ही संतोष मिलता समय मिलने पर वे बच्चों को कहानियां भी सुनाते थे। उन्हें अच्छे लेख व कहानियां भी लिखने का बहुत शौक था। बस यूँ ही दिन-रात चलता रहा और समय की धारा बहती चली गयी। देखते-2 साल गुजर जाता जब केलेन्डर में सन बदलता तब ध्यान आता अरे एक साल बीत गया। प्रकाश दिल का बुरा नहीं था देखने में भी खूबसूरत व सजीला लड़का था बस कमी थी तो यही कि वह बेवकूफों की क्षेणी में गिना जा सकता था। प्रकाश चाहता कि सब उसकी तारीफ करें बस वह इसी फिराक में रहता। जतिन खातिर व बेहद चालाकी के दिमाक का मालिक था। वह जानता था कि प्रकाश के माता-पिता बहुत धनी हैं और प्रकाश को जरूरत से ज्यादा चाहते हैं उसकी खुशी के लिये वे कुछ भी करने को तैयार हो जायेंगे यह बात वह अच्छी तरह जान गया था। इसीलिये जतिन प्रकाश की तारीफ के पुल बांधता रहता और अपना उल्लू सीधा करता रहता यानि कि चालाकी से अपना काम निकालता।

एक तो प्रकाश की पढ़ने-लिखने में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी ऊपर से जतिन का साथ वह न खुद पढता न प्रकाश को पढने देता। अक्सर दोनों स्कूल गोल करते और शहर में आवारागर्दी करते रहते। भूपति सब देखते पर बेवस होकर रह जाते कुछ न कहते धीरे-2 दोनों बालिग हो चले अब उनकी दिलचस्पी लडकियों में भी हो गयी। यहाँ वहाँ ताँक-झाँक करते रहते। भूपति ने अब इन्टर की परीक्षा बहुत अच्छे अंकों से पास कर ली थी। उनकी दिली इच्छा थी कि वे एक सफर राईटर व वेरिस्टर बने।

एक दिन रामाबाई दुपहर में आराम कर रही थी अपने कमरे में भूपति बडे सोचविचार के उधेडबुन में यहाँ-वहाँ घूँम रहे थे उन्हें रामाबाई के सामने अपने मन की बात व्यक्त करने में बड़ा संकोच महसूस हो रहा था। पर अनुमति तो लेनी ही थी, अपने जीवन के भविष्य का सवाल था। हिम्मत जुटाकर रामाबाई के कमरे में जाकर चुपचाप सर घुमाकर खड़े हो गये। जब रामाबाई की निगाह उन पर पड़ी वे हैरत से देखते बोली अरे भूपति

क्या हुआ तुम यूँ चुपचाप क्यों खड़े हो क्या कोई तकलीफ है? उन्होंने अनुमान लगाते हुये सोचा जरूर प्रकाश ने कोई फिर से शैतानी की होगी बोली-बोलो भूपति क्या बात है? क्या तुम्हें कुछ चीज की जरूरत है? तुम कुछ बोलो तो सही। भूपति हिम्मत जुटाकर बोले माँ मैं आगे पढना चाहता हूँ। यह बात सुनकर रामाबाई की जान में जान आयी वे मुस्कुराकर बोली अरे तो इसमें इतना संकोच करने की क्या बात है यह तो बडी अच्छी बात है तुम प्रतिभाशाली हो जरूर पढो जितना भी रूपया चाहिये हम से ले लो, हमें बडी खुशी होगी। भूपति बोले... पर माँ मुझे इसके लिये यहाँ से दूर विलायत जाना होगा, जिसके लिये मुझे धन के साथ-2 आपके आशीर्वाद की जरूरत होगी। सुनकर कुछ क्षण के लिये स्तम्भ रह गयीं। वे भूपति के बिना अपनी जिन्दगी के बारे में सोच भी नहीं सकती थी। वे भूपति को भी उतना ही चाहती थी। जितना प्रकाश को। हां दूसरी बात थी कि उन्हें प्रकाश में बचपन नजर आता था और भूप में धीरता व गंभीरता नजर आती थी। भूपति के रहने से वे घर-बार के बार में बिल्कुल निश्चिंत थी। भूपति की बात सुनकर उनकी तो दुनियां ही डोल गयी। भूपति घर ही नहीं उनके कारोबार के मामलों भी उन्हें समय-2 पर सलाह मशवरा देता था। पर अब भूपति ने ठान ली थी कि मन को इस परिवार से अपने को आप को अलग करना कोई आसान काम नहीं है पर उसे अब वो हालात देखकर अपनी भावनाओं पर काबू पाना ही होगा। यही सब सोच विचार करने के बाद भूपति भारीमन से उनसे आशीर्वाद लेकर वहां से चले गये। उसके चले जाने पर रामाबाई को उनकी अहमियत पता चली उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कैसे संभाले घर व कारोबार को उनके पति भी अब बूढे हो चले ये उन्हें भी कोई सहारे की जरूरत थी। प्रकाश को भी कोई सहयोग नहीं था तो बस अपनी ही धुन में जीता था। उसे तो बस जाति का नजरिया सही लगता जो भी वह कहे वही मानता कि एक न सुनता था। बस यूँ ही दिन गुजरते रहे। चाहे दुख हो या सुख समय न कभी रूका है न कभी रूकेगा यह तो नियत का चक्र है जो सदियों से चलता रहा है। अब जतिन व प्रकाश कॉलेज को शहर के जाने माने कॉलेज में दाखिला मिल गया था। प्रकाश के माता-पिता का शहर में काफी नाम व रूतवा था। जतिन अइयाश तो हमेशा से था अब कॉलेज में आकर तो उसे खुली छूट मिल गई पढाई का तो बस बहाना था, लडकियों को छेडना यहॉ मटर-गश्ती करना बस यही उसका काम था भला प्रकाश भी क्यों पीछे रहने लगा वह भी उसके साथ कदम से कदम मिलाकर चलता।

-क्रमशः

मासिक राशि भविष्यफल-सितम्बर 2009

○ डॉ.एन.पी मित्तल,पलवल

मेष-मेष राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से लाभ देने वाला है। नौकरी पेशा जातकों की भी पदोन्नति की उम्मीद की जा सकती है। स्थानान्तरण एवं कार्य क्षेत्र में परिवर्तन भी सम्भावित है। इन जातकों की कुछ यात्राएं भी होंगी जिनके अच्छे परिणाम सम्भावित हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से ये जातक सचेत रहें। समाज में यश, मान, प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

वृष-वृष राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से सामान्य फल दायक हैं। लाभ तो होगा पर खर्च भी विशेष होगा। घर में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। भाई बंधुओं की ओर से चिंता रहेगी। अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। दाम्पत्य जीवन सामान्य रहेगा। समाज में यश, मान, प्रतिष्ठा सामान्यतया बनी रहेगी।

मिथनु-मिथुन राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से आर्थिक लाभ देने वाला है। कोई नया कार्य आरम्भ करने की योजना भी बन सकती है। नौकरी पेशा जातकों के लिये भी समय अच्छा है। विद्यार्थियों का भी पढ़ाई में मन लगेगा। शत्रु परेशान करेंगे, पर जातक उनकी योजनाओं को सफल नहीं होने देंगे। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

कर्क-कर्क राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से सामान्यतया ठीक ही रहेगा। किसी विशेष व्यय की भी सम्भावना है। यात्रा में सावधानी बरतें, चोट लग सकती है। परिवार में सामन्जस्य बनाए रखें अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य के बारे में सचेत रहें। समाज में सामान्यतया मान सम्मान बना रहेगा।

सिंह-सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभदायक रहेगा। भूमि भवन के मामलों में भी फायदा होगा। किसी मांगलिक कार्य की भी घरमें होने की सम्भावना है। शत्रुओं से सावधान रहें। जीवन साथी के स्वास्थ्य के बारे में सचेत रहें। समय पर इलाज करवाएं वर्ना रोग बिगड़ सकता है।

कन्या-कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह लाभालाभ की स्थिति लिये हुए होगा। कोई मांगलिक कार्य आपके हाथों से हो सकता, नौकरी पेशा जातकों के लिये यह माह अच्छा साबित होगा। परिवार में सामन्जस्य बनाए रखें। शत्रुओं से सावधान रहें। अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

तुला-तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभ देने वाला है। कुछ यात्राओं का योग भी बनेगा किन्तु इन यात्राओं में सफलता के आसार कम हैं। शारीरिक चोट लग सकती है, सावधानी बरतें। इस महीने स्वास्थ्य भी नरम रहेगा। अकारण किसी के निजी मामले में पड़ना नुकसान देह हो सकता है।

वृश्चिक-वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य फल देने वाला है। आय व्यय में संतुलन बना रहेगा। नौकरी पेशा जातकों के लिये समय अच्छा है, यदि वे अपने उच्चाधिकारियों से सामन्जस्य बिठा सकें। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह माह सामान्य रहेगा। शत्रुओं से सावधान रहें। समाज में यश, मान, प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

धनु-धनु राशि के जातकों के लिये यह व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से पर्याप्त परिश्रम करा कर अल्प अर्थलाभ देने वाला है। कोई पूर्व से लटकी हुई योजना फलीभूत हो सकती है। छोटी बड़ी यात्राएं होगी जिनमें सावधानी आवश्यक है। चोट लगने से नुकसान हो सकता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से जीवन साथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। अकारण किसी के निजी मामले में न उलझें।

मकर-मकर राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से शुभफलदायक नहीं कहा जायेगा। स्वास्थ्य के प्रति भी सचेत रहें। प्रतिकूल परिस्थितियों में हौसला बनाए रखें। इस माह का उत्तरार्ध, पूर्वार्ध से बेहतर है। यश, मान, प्रतिष्ठा, समाज में सामान्य रूप से बनी रहेगी।

कुम्भ-कुम्भ राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अर्थ लाभ देने वाला हैं सोचे हुए कार्यों में सफलता मिलेगीं। शत्रुपक्ष कार्यों में रूकावट डालेगा। नौकरी पेशा जातकों के लिये यह माह अनुकूल है। यात्राए लाभकारी होंगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहे। समाज में यश, मान, प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

मीन-मीन राशि के जातकों के लिये यह माह व्यवसाय की दृष्टि से अर्थलाभ कराने वाला है। बुजुर्गों का सम्मान करें। कुछ जातक तीर्थ यात्रा भी कर सकते हे। दाम्पत्य जीवन में सामन्जस्य बनेगा। किसी अनजान व्यक्ति पर विश्वास करने से पहले सोचें। शत्रुओं से सावधान रहें। कुछ जातक स्वास्थ्य की प्रतिकूलता से प्रभावित रहेंगे। समाज में मान बना रहेगा।

-इति शुभम्

ज्ञान, भक्ति और कर्म की त्रिवेणी में स्नान करें

गुरू पूर्णिमा पर पूज्य आचार्य श्री का उद्‌बोधन

इस वर्ष सात जुलाई को गुरू पूर्णिमा थी। छह जुलाई को चातुर्मास स्थापना का दिन। पांच जुलाई को संघ प्रवर्तिनी साध्वी श्री मंजुला श्री जी का आषाढ सुदी त्रयोदशी के अनुसार 75वां वर्ष-प्रवेश इस प्रकार पांच जुलाई रविवार को आयोजित कार्यक्रम त्रिवेणी संगम था। यानि तीन विशिष्ट प्रसंगों का संगम। इस अवसर पर अपने आत्म-स्पर्शी प्रवचन में पूज्य आचार्य श्री रूपचन्द्र जी ने कहा आज त्रिवेणी संगम में डुबकी लेने का पावन अवसर है। हिन्दू धर्म में त्रिवेणी संगम प्रयाग-राज में स्नान करने को महान पुण्यकार्य माना गया है। सन् 1958 में कानपुर चातुर्मास के पश्चात् पूज्य आचार्य श्री तुलसी की कोलकाता-यात्रा के बीच इलाहाबाद पदार्पण हुआ। इलाहाबाद यानि प्रयाग राज में त्रिवेणी संगम है ही। त्रिवेणी संगम अर्थात गंगा, यमुना और सरस्वती तीन सरिताओं का संगम। पूज्य गुरूदेव संगम स्थल पधारें वहां हमने देखा गंगा यमुना का मिलन तो प्रत्यक्ष है। किंतु सरस्वती नदी की धारा कहां है? फिर त्रिवेणी संगम कैसे? गाइड ने कहा- ऐसी मान्यता है सरस्वती नदी का उत्स इन धाराओं के अन्दर ही है। उसका भीतर में ही इन धाराओं से मिलन हो जाता है।

पूज्यवर ने त्रिवेणी संगम को आध्यात्मिक अर्थ प्रदान करते हुए कहा मन, वाणी और शरीर का संगम है यह जीवन। इसमें वाणी और शरीर का मिलन गंगा और यमुना की तरह दृष्टिगोचर है। मन का उद्‌गम सरस्वती की तरह भीतर है। वह भीतर ही वाणी और शरीर की प्रवृति-धारा से मिल जाता है। इस गुरू पूर्णिमा प्रसंग पर मैं आपसे यही कहना चाहता हूं गंगा-जमुना और सरस्वती त्रिवेणी संगम की तरह इस मन वाणी और शरीर को त्रिवेणी संगम बनाएं। मंत्र, जाप, योग और ध्यान के अभ्यास से इस त्रिवेणी में बार-2 डुवकियां लें। मल-मल कर स्नान करें।

पूज्य गुरूदेव ने कहा-भारतीय चिंतन में इस त्रिवेणी का बड़ा महत्व हैं। हिन्दू चिंतन में सृष्टि के तीन देवता हैं- ब्रह्म, विष्णु और महेश। जन्म मरण के तीन कारण है- सत् रज और तम। इनसे मुक्त होने के साधन हैं भक्ति योग, ज्ञान योग और कर्म योग। इसी प्रकार जैन चिंतन में कहा- उत्पति विनाश और ध्रुवता इस त्रिपक्षी की संयुति है सत् अर्थात जगत और जीवन का अस्तित्व। मन वाणी और काया इन तीनों की चंचलता ही जन्म मरण का हेतु है। सम्यग दर्शन, ज्ञान और चरित्र इस रत्नत्रयी की आराधना से ही होती है कर्म बंधनों से मुक्ति परमात्म दशा की प्राप्ति। बौद्धों के बुद्धं धम्मं तथा संघ। ये तीन शरण

सुप्रसिद्ध हैं ही। इस प्रकार भारतीय चिंतन में त्रिवेणी का महत्व सर्वत्र दिखाई देता है।

आज के आयोजन की त्रिवेणी की एक धारा है। पूज्या महासती मंजुला श्री जी जीवन के 74 वसंत पार करके 75वें वर्ष में प्रवेश कर रही हैं अपने पूरे जीवन में जहां एक ओर आपने अनेक-अनेक असह्य बीमारियों का सामना किया है। वहां दूसरी ओर संप्रदाय गत राजनैतिक दुष्चक्रों को चीरते हुए पूरे साहस के साथ आगे बढ़ती रही हैं। इन्हीं संदर्भों को ध्यान में रखते हुए एक मुक्तक के साथ मैं आपके आरोग्यपूर्ण शतायु की मंगल कामना करता हूं। यों हैं वह मुक्तक-

क्या दर्द का असर कभी दीवानों पर हुआ है?
अंगारों का असर क्या परवानों पर हुआ है
क्या डरा रहे हो तुम हमें इन तूफानों से,
हमारा तो जन्म ही तूफानों पर हुआ है।

इस त्रिवेणी की दूसरी धारा है चातुर्मास योग की स्थापना जिसमें चार मास तक संत पुरूषों द्वारा ज्ञान गंगा प्रवाहित की जाती है। तीसरी मुख्य धारा है गुरू पूर्णिमा महोत्सव। इस अवसर पर शिष्य द्वारा गुरू पूजा की जाती है। इस प्रसंग पर मैं आपके समक्ष दो बातें स्पष्ट करना चाहता हूं। मेरे मन में किसी का गुरू बनने की कोई आकांक्षा नहीं है। अपनी अध्यात्म साधना में आपको मेरा सहयोग उपयोगी लगता है तो में अधिक से अधिक आपका कल्याण मित्र बन सकता हूं मेरे लिए गुरू शब्द का अर्थ है जो आपको किसी व्यक्ति पंथ या संघ विशेष अथवा मान्यता विशेष से न जोड़कर आपको अपने आप से जोड़े, आपके भीतर विराजमान आत्मा परमात्मा से जोड़े। मेरे अनुभव में वहीं सच्चा गुरू होता है। इसलिए आप सावधान रहें गुरू-पूजा, गुरू भक्ति और गुरू समर्पण के नाम पर आपकी श्रद्धा का इस्तेमाल कोई न करें, चमत्कार के नाम पर आप किसी ठगी का शिकार न हों, गुरू और शिष्य के बीच कैसा रिश्ता हो, इसके लिए किसी पहुंचे हुए संत ने ठीक ही कहा है-

शिष्य तो ऐसा चाहिए, गुरू को सब कुछ देय,
गुरू तो ऐसा चाहिए, शिष्य से कछु न लेय।

कसौटी आपके हाथ में है, निर्णय स्वयं करना है। आज के आयोजन का यही प्रयोजन है।

इस अवसर पर पूज्या साध्वी श्री ने कहा- जन्मदिन तो युगान्तरकारी महापुरूषों के ही मनाए जाने चाहिए। या फिर बच्चों की खुशियों के लिए माता-पिता उनके जन्मदिन मनाते हैं। मैं इन दोनों श्रेणियों में नहीं आती हूं। इसलिए मैं अपने जन्म-दिन मनाने के समर्थन में नहीं हूं। फिर भी आपकी भावनाओं को बहुमान देते हुए आपकी शुभ कामनाएं स्वीकार

करती हूं। इसके साथ ही मेरी सहयोगी साध्वियां-सरलमना साध्वी मंजुश्री जी साध्वी चांद कुमारी जी, साध्वी दीपांजी, साध्वी सुभद्रा जी (बाई महाराज) साध्वी कनकलता जी, साध्वी समताश्री जी, साध्वी बसुमती जी तथा साध्वी पद्मश्री जी के सहयोग सेवाओं का विशेष रूप से स्मरण इस प्रसंग पर करती हूं। गुरू-पूर्णिमा के अवसर पर संकल्प करें कि पूज्यगुरूदेव के साधना-सेवा मिशन को आगे ले जाने में हम जो भी कर सकते है उसमें कोई कसर नहीं छोड़ेगे।

आयोजन का आरंभ साध्वी-समुदाय के मंगल गीत से हुआ। साध्वी समता श्री जी के संयोजकीय वक्तव्य के पश्चात नन्हीं बालिकाएं मानसी, प्राची, दिव्या, सिमरन, शिखा तथा नन्हे रोहन ने सस्वर मंत्र पाठ किया। योग-प्रशिक्षक अरूण तिवारी के निर्देशन में बालक ऋषि और सुपारस ने योगासन प्रस्तुत किए। स्वर्गीय श्रीमती राय कंवर बाई की पड़पौत्री चेरी दुगड़ ने कविता के माध्यम से साध्वी श्री को शुभ कामनाएं दी। प्रबुद्ध साहित्यकार श्रीमती विनीता गुप्ता ने अपनी मंगल कामनाओं के साथ साध्वी श्री को एक मनोहारी सरस्वती कांस्य प्रतिमा, नारियल एवं शाल समर्पित किया। श्रीमती रीटा जैन ने भी अपनी श्रद्धा समर्पित करते हुए शाल भेंट किया। सौरभ मुनि जी ने पूज्यवर के प्रति भक्ति रस भीने, भजन को मधुर स्वरों में प्रस्तुति देकर उपस्थित जन समुदाय का मन मोह लिया। साध्वी चांद कुमारी जी आादि साध्वी समुदाय ने भाव-प्रवण गीतिका से पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी श्री को जन्मदिन की बधाई दी तथा सरलमना साध्वी मंजुश्री जी की ओर से शालार्पण किया। श्रीमती किरन तिवारी तथा रूपरेखा संपादिका श्रीमती निर्मला पुगलिया ने क्रमशः गीत और कविता द्वारा अभ्यर्थना की।

समाज सेवी श्रीमती मंजुबाई जैन ने जीवन में गुरू पर्व के महत्व पर अपने हृदय स्पर्शी वक्तव्य में कहा आज गुरू पूर्णिमा है, आध्यात्मिक परम्परा का एक सबसे पावन व सुन्दरपर्व यह एक संकल्प का पर्व है। यह गुरू की गुरूता का भी पर्व है। गुरू के सामने नतमस्तक होने का भी पर्व है। हम सभी बहुत ही अत्यन्त सौभागयशाली है कि हमें आचार्य श्री रूपचन्द्र जी के रूप में गुरू मिलें।

हमारे गुरूदेव हमारे मार्गदर्शक हैं।

हमारी प्ररेणा के स्त्रोत है।

गुरूदेव ने हमें जीवन पथ में प्रगति का मार्ग दिखाया है हमारे जीवन में बिखरे हुए कांटों को दूर किया है। उन्होंने अपनी साधना व तपस्या का एक अंश हमें भी दिया है ताकि हममें भी ऊर्जा उत्पन्न हो जाए कि हम सांसारिक द्वन्द्वों से मुकाबला कर सकें।

गुरूदेव हमारे संबल हैं, हमारे कल्पवृक्ष है, इस वृक्ष के नीचे बैठकर हमें बहुत सुकून मिलता है।

ऐसे गुरू का शिष्य होकर हमें बहुत गर्व है लेकिन एक शिष्य होने के नाते हमारे भी कुछ कर्त्तव्य है।

सबसे पहली आवश्यकता जो एक शिष्य की होती है। वह है अपने गुरू में अटूट श्रद्धा का व समर्पण का भाव।

समर्पण का अर्थ है बिना किसी शर्त के अपने आपको गुरू के चरणों में सौंप देना। सच्चा शिष्य वही होता है जिसने अपने गुरू की महानता को अपने अंदर उतारने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। हम सभी को सच्चे हृदय से गुरू के बताए हुए पथ पर अग्रसर होकर कुछ नया सृजन शुरू कर देना चाहिए।

गुरू पूर्णिमा का पर्व हम सभी के लिए यह अवसर भी लेकर आता है कि गुरू की प्रखर प्रज्ञा हमारी हर प्रवृति हर क्रिया का सूक्ष्म निरीक्षण करें एवं हमारी शुभ चेष्ठा पर हमारी पीठ भी थपथपा सके। तो आइए हम सभी उनकी इस श्रेष्ठ स्थापना मानव मंदिर मिशन को अपने दिल से, अपनी आत्मा से अधिक से अधिक प्यार करें और इस मिशन को जन जन तक फैलाने का प्रयास करें। सभी सच्चे अर्थों में इस गुरू पूर्णिमा का ये त्यौहार हमारे जीवन में उत्सव लेकर आएगा व हमारा धरती पर आना कुछ पलों के लिए सार्थक हो जाएगा। जैन समाज दिल्ली के सर्व प्रिय नेता सलेक चन्द जी जैन कागजी ने अपनी विनयांजलि में कहा आज इस आयोजन में सम्मिलित होकर मैं अत्यन्त आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ। सेवा साधना के रूप में इस जैन मंदिर आश्रम ने पूज्य आचार्य श्री तथा पूज्या साध्वी श्री जी के मार्ग-दर्शन में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। कार्यक्रम के अंत में लता मंगेशकर द्वारा उद्गीत नवकार मंत्र की सी.डी. तथा पूज्य गुरूदेव तथा पूज्या साध्वी श्री के भजनों का संग्रह 'प्रीत नहीं की प्रभुवर से' का नया संस्करण आशीर्वाद के रुप में सभी को प्रदान किया गया। आज का मधुर भंडारा श्री दीनदयाल जी गोयल की ओर से रहा। भंयकर गर्मी के मौसम में भी लोगों की विशाल उपस्थिति उनकी श्रद्धा और प्रेम का जीवंत उदाहरण भी था।

पर्युषण महापर्व की आराधना

जैन परंपरा का महान् पर्युषण महापर्व इस वर्ष 17 अगस्त से 24 अगस्त तक मनाया जाएगा। न्यूयार्क जैन समाज की भाव भरी प्रार्थना पर पूज्य गुरूदेव ने इस महापर्व की आराधना की स्वीकृति अमेरिका वासियों को प्रदान की है। जैन आश्रम, नई दिल्ली में यह महापर्व पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी श्री मंजुलाश्री जी के सानिध्य में रहेगा। 24 अगस्त संवत्सरी पर विशेष तप-जप तथा प्रवचन रहेगा। इस आध्यात्मिक पर्व पर अपने को जप-तप, स्वाध्याय तथा क्षमा भाव से मनाकर अपनी आत्मा को शुद्ध निर्मल बनाएं तथा संतपुरूषों के विशेष प्रवचनों का लाभ अवश्य उठाएं।

-अरूण तिवारी

-रूपरेखा पत्रिका की संपादिका श्रीमती निर्मला पुगलिया पूज्या साध्वीश्री के जन्म-दिवस पर पाठक-परिवार की ओर से मंगल-कामना देते हुए।

-गुरू-पूर्णिमा पर यशस्वी लेखिका डॉ विनीता गुप्ता अपनी विनयांजलि समर्पित करते हुए।

-समाज-सेवी श्री सलेकचन्द्र जी जैन अपने हृदयोद्‌गार प्रकट करते हुए।

-पूज्या साध्वीश्री के प्रति गीतिका के माध्यम से अपनी शुभ-कामनाएं देते हुए साध्वी-समुदाय।

-गुरू-पूर्णिमा की महिमा पर हृदय-स्पर्शी वक्तव्य देते हुए समाज-सेवी श्रीमती मंजुबाई जैन।

-गुरूकुल की नन्ही बालिकाएं मंगल मंत्रों का उच्चारण करते हुए।

-गुरू-समर्पण से ओत-प्रोत भजन का गायन करते हुए सौरभ मुनि।

-अपना उद्‌बोधन-प्रवचन करते हुए पूज्य आचार्यश्री।

-इस पावन प्रसंग पर उपस्थित मंत्र-मुग्ध जन-समुदाय की एक झलक।

-जन-समुदाय की मंगल कामनाओं पर अपने विचार प्रकट करते हुए पूज्या साध्वीश्री जी।